पाँचवाँ परिच्छेद

वाक्यों का विरोध
(OPPOSITION OF PROPOSITIONS)

5.1 अर्थ (*Meaning*)

कुछ ऐसे वाक्य होते है जिनका आपस में कोई सम्बन्ध नहीं रहता—जैसे, सभी पंजाबी भारतीय हैं, और कोई घोड़ा बैल नही है—दोनों वाक्यों में कोई लगाव नहीं है क्योंकि उनमे न तो उद्देश्य ही एक है और न विधेय। दोनों में भिन्न-भिन्न पदार्थों के विषय में भिन्न-भिन्न बातें कही गयी हैं। पर कुछ ऐसे भी वाक्य होते है जिनका आपस मे सम्बन्ध होता है। जैसे सभी पंजाबी भारतीय हैं, और कुछ पंजाबी भारतीय नहीं हैं—दोनों वाक्यों में आपस में लगाव है, क्योंकि उनमें एक ही उद्देश्य और एक ही विधेय हैं अर्थात् दोनों में एक ही पदार्थ का एक ही बात से सम्बन्ध जोड़ा गया है। उनमें उद्देश्य और विधेय में दो प्रकार का सम्बन्ध है पर उद्देश्य और विधेय एक हैं। अतः जब भिन्न-भिन्न वाक्यों का उद्देश्य और विधेय पद एक होता है तभी उनमें सम्बन्ध होता है। पर यदि दोनों में किसी प्रकार का भेद नहीं हो तो दोनों वाक्य एक हो जायेंगे, इसलिए उद्देश्य और विधेय एक होते हुए भी उनमें भेद होना आवश्यक है। यह भेद उनके गुण (quality) या परिमाण (quantity) या दोनों गुण और परिमाण, में हो सकता है; जैसे, यदि एक वाक्य भावात्मक हो और दूसरा निषेधात्मक तो गुण का भेद हुआ, यदि एक पूर्णव्यापी हो और दूसरा अंशव्यापी तो परिमाण में भेद हुआ और यदि एक भावात्मक पूर्णव्यापी (A) और दूसरा निषेधात्मक अंशव्यापी (O) या एक निषेधात्मक पूर्णव्यापी (E) और दूसरा भावात्मक अंशव्यापी (I) हो तो गुण और परिमाण दोनों में भेद हुआ। इसलिए जब दो ऐसे वाक्य हों जिनका उद्देश्य और विधेय एक हों पर इनमें गुण या परिमाण या दोनों (दोनों गुण और परिमाण) में भेद रहे तो उनके सम्बन्ध को वाक्यों का विरोध (Opposition of propositions) कहा जाता है (Opposition of propositions is the relation between two propositions having the same subject and predicate but differing either in quality or quantity or both), जैसे—

All potes are imaginative—A
सभी स प है—A
No poets are imaginative—E
कोई स प नहीं है—E
} केवल गुण में भेद।

All men are rational—A
सभी स प है—
Some men are rational—I
कुछ स प है—I
} केवल परिमाण में भेद।

All men are rational—A
सभी स प है—A
Some men are not rational—O
कुछ स प नहीं है—O
} गुण और परिमाण दोनों में भेद।

5.2 विरोध के प्रकार (*Kinds of Opposition*)

वैसे वाक्यों में जिनके उद्देश्य और विधेय एक हों पर गुण आदि में भेद हो, चार प्रकार का सम्बन्ध हो सकता है। अतः वाक्यों का विरोध (Opposition of Propositions) चार प्रकार के होते है। (1) उपाश्रितता (Subalternation), (2) विपरीतता (Contrariety), (3) अनुविपरीतता (Subcontrariety), (4) व्याघातकता (Contradictiory)।

1. उपाश्रितता (*Subalternation*)[1]

उपाश्रितता दो वाक्यों का सम्बन्ध है जिनके उद्देश्य और विधेय एक हों पर उनमें केवल परिमाण का अन्तर हो, जैसे 'A' और 'I' या 'E' और 'O'।

(क) A—All kings are wise. (सभी स प हैं।)
I—Some kings are wise. (कुछ स प है।)

(ख) E—No writer is rich. (कोई स प नहीं है।)
O—Some writers are not rich. (कुछ स प नहीं है।)

पहले उदाहरण (क) में दोनों वाक्यों के उद्देश्य और विधेय एक हैं, उनके गुण में भी अन्तर नहीं है क्योंकि दोनों भावात्मक हैं पर उनके परिमाण में भेद है, एक पूर्णव्यापी है और दूसरा अंशव्यापी, इसलिए उनमें उपाश्रितता (subalternation) का सम्बन्ध है।

दूसरा उदाहरण (ख) में भी दोनों वाक्यों के उद्देश्य विधेय और गुण एक हैं क्योंकि दोनों निषेधात्मक हैं पर उनके परिमाण में अन्तर है, एक पूर्णव्यापी है और दूसरा अंशव्यापी। अतः इनमें भी उपाश्रितता का सम्बन्ध है। इसलिए यह सम्बन्ध पूर्णव्यापी और समान गुणवाले अंशव्यापी वाक्यों के बीच होता है। पूर्णव्यापी वाक्य उपाश्रय (subalternant) और उससे सम्बन्धी अंशव्यापी वाक्य उपाश्रित (subalternate) कहा जाता है। 'A' वाक्य 'All kings are wise' उपाश्रय है और 'I'—Some kings are wise' उपाश्रित है। वैसे ही 'E' वाक्य, No writer is rich उपाश्रय है और 'O'—Some writers are not rich, उपाश्रित।

2. विपरीतता (*Contrariety or Contrary Opposition*)[2]

विपरीतता दो पूर्णव्यापी वाक्यों का सम्बन्ध है, जिनके उद्देश्य और विधेय एक हों पर उनमें गुण का अन्तर हो। पूर्णव्यापी वाक्य दो हैं, A और E—उनमें केवल गुण का अन्तर है, एक भावात्मक है तो दूसरा निषेधात्मक। इसलिए यह संबंध A और E के बीच होता है। ये एक दूसरे के विपरीत होते हैं।

---

1. Subalternation is the relation between two propositions having the same subject and predicate but differing only in quantity.
2. Contrariety is the relation between two universal propositions having the same subject and predicate but differing only in quality.

A—All kings are rich (सभी स प हैं।)

E—No kings are rich. (कोई स प नहीं है।)

दोनों पूर्णव्यापी वाक्य हैं और उनका उद्देश्य और विधेय एक है। उनमें अन्तर केवल गुण में है क्योंकि 'A' भावात्मक है और 'E' निषेधात्मक। इसलिए A—'All kings are rich' का विपरीत वाक्य E—'No kings is rich' है या E का A।

3. अनुविपरीतता (*Sub-contrariety or Sub-contrary Opposition*)[1]

अनुविपरीतता दो अंशव्यापी वाक्यों का सम्बन्ध है, जिनके उद्देश्य और विधेय एक हों पर उनके गुण में अन्तर हो। अंशव्यापी वाक्य दो ही होते हैं 'I' और 'O' उनमें केवल गुण का अन्तर है, एक भावात्मक है तो दूसरा निषेधात्मक। इसलिए यह सम्बन्ध I और O के बीच होता है। ये दूसरे के अनुविपरीत होते हैं।

I—Some students are wise (कुछ स प हैं।)

O—Some students are not wise. (कुछ स प नहीं हैं।)

दोनों अंशव्यापी वाक्य हैं और उसके उद्देश्य और विधेय एक ही हैं। उनमें केवल गुणों का भेद है, एक भावात्मक है तो दूसरा निषेधात्मक। इसलिए I—Some students are wise का अनुविपरीत वाक्य O—Some students are not wise और 'O' का 'I' होगा।

4. व्याघातकता (*Contradictory Opposition*)[2]

व्याघातकता दो वाक्यों का सम्बन्ध है जिनके उद्देश्य और विधेय एक हों पर उनमें गुण और परिमाण दोनों में अन्तर हो। यह सम्बन्ध A और O या E और I के बीच होता है। A—O या E—I, व्याघातक वाक्य हैं।

(क) { A—All studens are wise. (सभी स प है।)
O—Some students are not wise. (कुछ स प नहीं हैं।)

(ख) { E—No man is perfect. (कोई स प नहीं है।)
I—Some men are perfect. (कुछ स प है।)

(क) इसमें दोनों वाक्यों का उद्देश्य और विधेय एक है पर एक भावात्मक है तो दूसरा निषेधात्मक और एक पूर्णव्यापी है तो दूसरा अंशव्यापी। इसलिए उनमें गुण और परिमाण दोनों में अन्तर है। A और O व्याघातक वाक्य है। A का व्याघातक वाक्य O है और O का A।

(ख) इसमें भी दोनों वाक्यों का उद्देश्य और विधेय एक हैं पर एक निषेधात्मक है तो दूसरा भावात्मक और एक पूर्णव्यापी है तो दूसरा अंशव्यापी। उनमें गुण और परिमाण दोनों में भेद है। E और I व्याघातक वाक्य हैं और E का व्याघातक वाक्य I और I का E है। व्याघातक वाक्यों में गुण और परिमाण दोनों में भेद होता है इसलिए उन वाक्यों का विरोध पूर्ण है।

---

1. Sub-contrariety is the relation between two particular propositions having the same subject and predicate but differing only in quality.
2. Contradictory opposition is the relation between two propoitions having the same subject and predicate but differing in quality and quantity. both.

5.3 वाक्य-विरोध का वर्ग (*Square of Opposition*)

भिन्न-भिन्न वाक्यों में, जिनका उद्देश्य और विधेय एक हो, चार प्रकार का सम्बन्ध बताया गया है, उपाश्रितता, विवरीतता, अनुविपरीतता, और व्याघातकता का। इन सम्बन्धों को एक वर्ग के द्वारा व्यक्त किया जा सकता है। इस वर्ग को वाक्यविरोध का वर्ग (Square of Opposition) कहा जाता है।

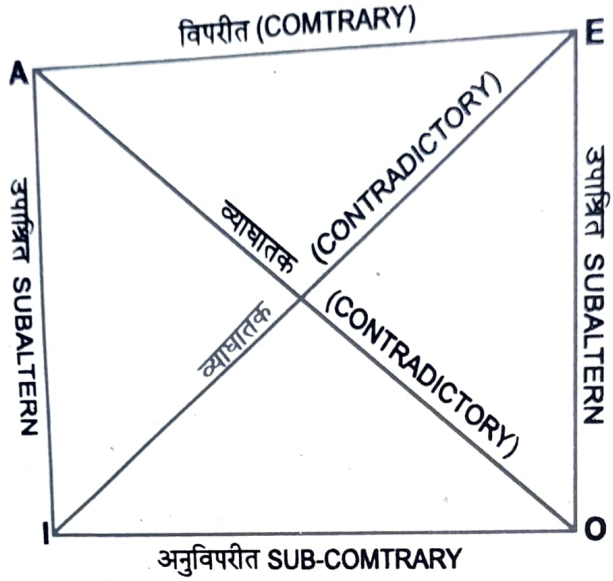

A—I, E—O, एक दूसरे के उपाश्रित हैं, उनमें उपाश्रितता का सम्बन्ध है। A—E, एक दूसरे के विपरीत हैं, उनमें विपरीतता का सम्बन्ध है। I—O, एक दूसरे के अनुविपरीत है, उनमें अनुविपरीतता का सम्बन्ध है और A—O, E—I, एक दूसरे के व्याघातक हैं, इसलिए उन्हें सबसे लम्बी लकीर, कर्ण के द्वारा व्यक्त किया गया है। उनमें व्याघातकता का सम्बन्ध है:

5.4 व्यक्तिवाचक वाक्यों का विरोध (*Opposition of singular propositions*)

व्यक्तिवाचक वाक्यों का उद्देश्य एकवाचक (singular) पद होता है। यदि उद्देश्य पद निश्चित होता है तो वाक्य पूर्णव्यापी है। जैसे—राम ईमानदार है (Ram is honest) या यह कलम काला है (This pen is black) या वह बिल्ली उजली है (The cat is white)। ऐसे व्यक्तिवाचक वाक्य अंशव्यापी नहीं हो सकते हैं। इसलिए ऐसे वाक्यों का उपाश्रित (subalternate) या अनुविपरीत (subcontrary) वाक्य नहीं हो सकता है। इनका केवल विपरीत वाक्य हो सकता है। राम ईमानदार है (Ram is honest) 'A' का विपरीत वाक्य राम ईमानदार नहीं है (Ram is not honest) 'E' या यह कलम काला है (This pen is black)—A का विपरीत वाक्य यह कलम काला नहीं है (The pen is not black)—E होगा, राम अच्छा है का राम अच्छा नहीं है, होगा। यद्यपि आकार में ये विपरीत वाक्य हैं और इनका व्याघातक नहीं हो सकता, क्योंकि ऐसे वाक्य अंशव्यापी नहीं हो सकते, तो भी ये व्याघातक का ही बल रखते हैं। एक के सत्य होने से दूसरा असत्य या एक के असत्य होने से दूसरा सत्य होता है। यही विशेषता व्याघातक वाक्यों की होती है। अतः व्यक्तिवाचक वाक्यों में विपरीत (contrary) और व्याघातक (contradictory) एक ही होते हैं।

5.5 हेत्वाश्रित तथा वैकल्पिक वाक्यों का विरोध

हेत्वाश्रित वाक्यों के चार रूप—

A—यदि कोई क ख है तो सदा क ग है।

E—यदि कोई क ख है तो कोई क ग नहीं है।

I—यदि कोई क ख है तो कभी-कभी क ग है।

O—यदि कोई क ख है तो कभी-कभी क ग नहीं है।

उपाश्रितता का सम्बन्ध

A—यदि कोई क ख है तो सदा क ग है।

I—यदि कोई क ख है तो कभी-कभी क ग है।

E—यदि कोई क ख है तो कोई क ग नहीं है।

O—यदि कोई क ख है तो कभी-कभी क ग नहीं है।

विपरीतता का सम्बन्ध

A—यदि कोई क ख है तो सदा क ग है।

E—यदि कोई क ख है तो कोई क ग नहीं है।

अनुविपरीतता का सम्बन्ध

I—यदि कोई क ख है तो कभी-कभी क ग है।

O—यदि कोई क ख है तो कभी-कभी क ग नहीं है।

व्याघातक सम्बन्ध

A—यदि कोई क ख है तो सदा क ग है।

O—यदि कोई क ख है तो कभी-कभी क ग नहीं है।

E—यदि कोई क ख है तो कोई क ग नहीं है।

I—यदि कोई क ख है तो कभी-कभी क ग है।

5.6 क्या उपाश्रितता विरोध का वास्तविक रूप है? *(Is Subalternation a real form of Opposition ?)*

तर्कशास्त्रियों ने विरोध का अर्थ 'सम्बन्ध' लिया हे और इसी अर्थ में वे वाक्यों के विरोध की परिभाषा बताते हैं, दो वाक्यों का सम्बन्ध, जिनका उद्देश्य और विधेय एक हो पर केवल गुण या केवल परिमाण या दोनों में भेद रहे। उन्होंने वाक्यों में किसी प्रकार के सम्बन्ध को विरोध कहा है। यह विरोध (opposition) शब्द का बहुत ही विस्तृत अर्थ है। इसके अनुसार तो उपाश्रितता (subalternation) विरोध का ही एक रूप है। दो वाक्यों के सम्बन्ध का जिनका उद्देश्य और विधेय एक हो पर केवल परिमाण में अन्तर हो उपाश्रितता कहा जाता है। जैसे A और I, E और O। तो उपर्युक्त अर्थ के अनुसार यह भी विरोध का रूप हुआ।

वास्तव में विरोध (opposition) तो वहीं होता है जहाँ मेल न हो अर्थात् दोनों वाक्य एक साथ सत्य या असत्य न हो सकें। सम्बन्ध तो दो प्रकार का हो सकता है, मेल या विरोध का। जहाँ दो वाक्य एक साथ सत्य या असत्य हो सकें वहाँ तो उनमें मेल का सम्बन्ध हुआ, विरोध का नहीं। अब यदि उपाश्रितता को देखा जाय तो

इनमें दोनों वाक्यों में केवल परिमाण का अन्तर है, गुणा का नहीं। वे एक साथ सत्य या असत्य हो सकते है। जैसे 'सभी विद्यार्थी मूर्ख हैं—A और 'कुछ विद्यार्थी मूर्ख है' —I. ये दोनों वाक्य एक साथ सत्य हो सकते हैं और असत्य भी क्योंकि यदि 'सभी विद्यार्थी मूर्ख है' सत्य है तो कुछ विद्यार्थी तो उसी में शामिल हैं, इसलिए 'कुछ विद्यार्थी मूर्ख है' भी अवश्य ही सत्य होगा। यदि 'कोई विद्यार्थी मूर्ख नहीं है' सत्य हो तो दोनों वाक्य 'सभी विद्यार्थी मूर्ख है' और 'कुछ विद्यार्थी मूर्ख है' असत्य हो जाते है। यही E और O के सम्बन्ध में भी सत्य है। अतः यदि विरोध का वास्तविक अर्थ लिया जाय तो उपाश्रितता विरोध का वास्तविक रूप नहीं है। उपाश्रितता में मेल का सम्बन्ध रहता है।

अरस्तू (Aristotle) ने भी उपाश्रितता को इसी कारण से विरोध का रूप नहीं माना है। उसने केवल विपरीतता और व्याघातकता को ही विरोध का रूप बतलाया है।

5.7 क्या अनुविपरीतता विरोध का वास्तविक रूप है? *(Is Subcontrariety a real form of Opposition ?)*

अनुविपरीतता के विषय में भी करीब-करीब वही तर्क लागू है जो उपाश्रितता में इस्तेमाल हुआ है। यह सम्बन्ध 'I' और 'O' वाक्य के बीच होता है। इनमें परिमाण में अन्तर नहीं, भेद केवल गुण में है। पर ये एक साथ सत्य हो सकते हैं। जैसे—कुछ आम मीठे हैं और कुछ आम मीठे नहीं हैं—ये दोनों वाक्य एक साथ सत्य हो सकते हैं। इसलिए इनमें भी वास्तविक विरोध का सम्बन्ध नहीं है। विरोध तो तब होता जब दोनों एक साथ सत्य नहीं होते। अरस्तू (Aristotle) ने भी अनुविपरीतता को विरोध का रूप नहीं माना है। पर यदि विरोध का अर्थ 'किसी प्रकार का सम्बन्ध' माना जाय तब अनुविपरीतता भी विरोध का ही एक रूप होगा। पर यह विरोध शब्द का विस्तृत अर्थ होगा।

5.8 अरस्तू के अनुसार वाक्य-विरोध का वर्ग *(The square of opposition according to Aristotle)*

अरस्तू ने वाक्यों में केवल दो ही प्रकार का विरोध माना है, विपरीतता और व्याघातकता का।

अनुविपरीतता और उपाश्रितता को वह विरोधी वाक्यों का रूप नहीं मानता क्योंकि वैसे वाक्य एक साथ सत्य हो सकते हैं।

विपरीतता और व्याघातकता में भी वह विपरीतता को ही पूर्ण विरोध मानता है। इसलिए वर्ग की सबसे लम्बी लकीर, कर्ण द्वारा उस सम्बन्ध का संकेत किया गया हैं। व्याघातकता का संकेत छोटी रेखा द्वारा हुआ है इसलिए कि वैसे वाक्यां में आंशिक विरोध है।

5.9. कुछ हल किए हुए उदाहरण *(Worked out examples)*

1. निम्नलिखित को तार्किक रूप में लाकर उसका विपरीत तथा व्याघातक बताएँ।

Put the following in logical form and give its contrary and contradictory.

Only wise are happy.

केवल बुद्धिमान सुखी हैं।

इसका ता० रू०—All happy persons are wise—A.

सभी सुखी व्यक्ति बुद्धिमान हैं—A

इसका व्याघातक (contradictory)—O—Some happy persons are not wise.
कुछ सुखी व्यक्ति बुद्धिमान नहीं हैं—O
इसका विपरीत (contrary)—E—No happy person is wise.
कोई सुखी व्यक्ति बुद्धिमान नहीं है—E

2. Put the following in logical form and give its opposites.
निम्नलिखित को तार्किक वाक्य में परिवर्तित कर सम्बन्धित वाक्यों को निकालें।

None but the wise are contendted.
बुद्धिमान के अतिरिक्त कोई सन्तोषी नहीं है।
इसका ता॰ रू॰—All contented persons are wise—A.
(सभी सन्तोषी व्यक्ति बुद्धिमान हैं—A)
इसका उपाश्रित (subaltern)—Some contented persons are wise–I
कुछ सन्तोषी व्यक्ति बुद्धिमान हैं—I
इसका विपरीत (contrary)—No contented person is wise—E,
कोई सन्तोषी व्यक्ति बुद्धिमान नहीं हैं—E
अनुविपरीत (sub-contrary)—नहीं होगा।
व्याघातक (contradictory)—Some contented persons are not wise—O,
कुछ सन्तोषी व्यक्ति बुद्धिमान नहीं हैं—O